UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 70-71

"उच्च शिक्षा, संस्कार एवं सामाजिक दृष्टि"

डॉ. श्रीमती संतोष श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
(शास. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

सारांश
शिक्षा वस्तुतः जीवन जीने की उस कला का आधार है जिसे हम कई चरणों में अर्जित करते हैं। शिक्षा के विविध सोपान तथा प्रायमरी, सैकेण्डरी से ऊपर आकर हम उच्च शिक्षा के तहत तकनीकी, प्रौद्योगिक, विज्ञानगत एवं व्यवहारिक ज्ञान अर्जित करने हेतु युवा पीढ़ी को दीक्षित करते है। युवा शक्ति ही किसी देश, राष्ट्र के त्वरित, स्वस्थ, समग्र विकास की आधार है। चीन में विगत दशाब्दियों में अत्यन्त तीव्रगामी विकास अपनी काम करने वाली विपुल आबादी–युवा शक्ति के आधिक्य, उसके सही संयोजन, शिक्षा एवं उपयोग के फलस्वरूप किया। हमें आश्वस्त करने वाली बात है कि भारत लगभग सवा अरब की आबादी के साथ एकदम युवा देश है।

शिक्षा वस्तुतः जीवन जीने की उस कला का आधार है जिसे हम कई चरणों में अर्जित करते हैं। शिक्षा के विविध सोपान तथा प्रायमरी, सैकेण्डरी से ऊपर आकर हम उच्च शिक्षा के तहत तकनीकी, प्रौद्योगिक, विज्ञानगत एवं व्यवहारिक ज्ञान अर्जित करने हेतु युवा पीढ़ी को दीक्षित करते है।

युवा शक्ति ही किसी देश, राष्ट्र के त्वरित, स्वस्थ, समग्र विकास की आधार है। चीन में विगत दशाब्दियों में अत्यन्त तीव्रगामी विकास अपनी काम करने वाली विपुल आबादी–युवा शक्ति के आधिक्य, उसके सही संयोजन, शिक्षा एवं उपयोग के फलस्वरूप किया। हमें आश्वस्त करने वाली बात है कि भारत लगभग सवा अरब की आबादी के साथ एकदम युवा देश है। इतने विशाल संसाधन के सही संयोजन, शिक्षा, मार्गदर्शन व समुचित उपयोग से किसी भी समाज, राष्ट्र की आद्योपान्त तस्वीर बदली जा सकती है, जरूरत है कि युवाओं को न केवल ज्ञान आधारित वरन् मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाये। शिक्षा के प्रथम सौपान से ही उन्हें नैतिक शिक्षा, संस्कृति के स्वरूप से रूबरू करते हुए संस्कारवान मानव बनने की और प्रेरित किया जाये।

खेद है कि हमारे शिक्षा शास्त्री यह अनुभव करते हैं और इस ओर इंगित करते है कि हमारे यहां शिक्षा के विभिन्न सौपानों में समुचित सामंजस्य है। अधिकांशः हम पुस्तकीय ज्ञान पर जोर दे रहे है। किन्तु शिक्षा का मुख्य उद्देश्य तो शिक्षार्थी के समग्र विकास, उसके बौद्धिक, वैचारिक, व्यवहारिक व आध्यात्मिक उन्नयन से ही संभव है।

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में आर्थिक सम्पन्नता से उत्प्रेरित सरकार शिक्षा को सामाजिक दायत्वि के दर्जे से निकाल विशुद्ध भौतिकवादी दृष्टिकोण के साथ बाजार की वस्तु बनाने के एजेण्डे पर अग्रसर हो रही है, जिसके फलस्वरूप शिक्षा में शुद्धता, तकनीकी, प्रौद्योगिक एवं रोजगोरान्मुखी शिक्षा पर जोर है। मात्र भौतिकवादी

दृष्टिकोण के तहत शिक्षा के केवल ज्ञान आधारित होने के कारण सामाजिक सरोकार, आत्मचिंतन व भारत के शाश्वत मूल्यों को अक्षुण्य रखने की प्रवृत्ति का अभाव हमारी युवा शक्ति को, ऐसा प्रतित होता है, शनैः–शनैः

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 70-71

संस्कारहीनता की ओर ढकेल रहा है, पर वर्षों की अधीनता एवं हीनता बोध के कारण भारतीय युवा मन में जो विश्वासहीनता घर कर गई थी उसमें सुधार के लक्षण नजर आ रहे हैं, यह संतोष का विषय है।

भारतीय युवा में औपचारिक शिक्षा ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में तो नई उमंग, उत्साह एवं विश्वास का संचार किया है किन्तु आज भी हमें ''ऐसी सर्वांग सम्पन्न शिक्षा की जरुरत है जो हमें सच्चा मनुष्य और युवा सोच दे सके।''

–स्वामी विवेकानंद

संस्कार शब्द से संस्कृति शब्द का निर्माण हुआ है। संस्कृति से अभिप्राय विभिन्न संस्कारों के द्वारा सामूहिक जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति। संस्कारों द्वारा ही मनुष्य आदर्श सामाजिक नागरिक बन सकता है एवं एक मानव। संस्कार हमें अपने परिवार, समुदाय, राज्य, देश, धर्म, जाति, प्रजाति, मित्रमंडली, विद्यालय से प्राप्त होते हैं। हमारा रहन–सहन का तरीका, भोजन, बातचीत का तरीका, हमारे मूल्य, आस्था एवं विश्वास, आचार–विचार, कला, साहित्य, क्षमताएं, भावात्मक लगाव, बौद्धिकता, विभिन्न शैलियां, कार्यकलाप, सोचने का ढंग, सत्यं सुन्दरम् शिवम् की भावना, भौतिक संसाधन, सामाजिक प्रभुत्व, दार्शनिकता, ब्रह्मचर्य, साधना, सेवा, सत्य, अहिंसा, सहयोग, सदभावना, नैतिकता आदि हमारे संस्कारों के ही प्रतिबिम्ब होते हैं।

संस्कार मुख्यतः हमें अपने परिवार से प्राप्त होते हैं किन्तु उन संस्कारों में सुधार, परिमार्जन एवं शोधन का कार्य हमारी शिक्षा करती है। यह दायत्वि माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा का माना जाता है। उच्च शिक्षा तक आते–जाते यह मान लिया जाता है कि विद्यार्थी पूर्ण रूप से एक संस्कारी व्यक्तित्व का स्वामी बन गया है और उच्च शिक्षा में संस्कारों के निर्माण पर उतना बल नहीं दिया जाता है जितना कि दिया जाना चाहिये। वर्तमान समय में यह दृष्टिगत होता है कि पाश्चात्य के प्रभाव से उच्च शिक्षा में संस्कारों को पूर्णतया तिरस्कृत किया जा रहा है।

उच्च शिक्षा में प्रवेश करते ही विद्यार्थी की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक, आध्यात्मिक सभी संस्कारों में नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगते है। जैसे उनके चलने, बोलने का ढंग, वेशभूषा, विचार, सामाजिक स्वतंत्रता, सांवेगिक, नैतिक, आध्यात्मिकता पर पूर्ण पाश्चात्य प्रभाव दिखने लगता है। छात्र स्वयं को स्वच्छन्द एवं बन्धनरहित समझने लगते है जिसके परिणाम स्वरूप उच्च शिक्षा में नित्य अनुशासनहीनता, अपराध, मौजमस्ती, झगडे एवं शिक्षा पर कम ध्यान देना आदि स्थितियां देखी जा सकती है जो वर्तमान व भविष्य के लिये एक बड़ी चुनौती है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि उच्च शिक्षा में जो भी छात्रों के संस्कारों को रक्षित करना है, मार्गान्तिक करना है, शोधन करना है और अच्छे संस्कारों को और संस्थापित करना है। उच्च शिक्षा ज्ञान ही न दे वरन् अच्छे संस्कार भी दे जिसके लिये कड़ा अनुशासन भी रखा जाये तो मान्य होना चाहिये उच्च शिक्षा शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर, आई.ए.एस. एवं IPS अधिकारी, वकील, अन्य का ही निर्माण न करें बल्कि अच्छे मानव, आदर्श नागरिक एवं संस्कारी पुरूषों का भी निर्माण करें।

संदर्भ :–

' उच्च शिक्षा एवं संस्कार ' डॉ. शुचि गुप्ता, डॉ. निशा अग्रवाल, शोध पत्रिका 2008, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुरैना।